नाम : सालिम कमर।
कक्षा : ९ फ।
पाठशाला : ओशवाल एकेडेमी नैरोबी जूनियर हाई।

खुशी

मानव जीवन के नौ रस में से एक रस है खुशी।

शेक्सपियर ने कहा है कि जीवन एक दुखपूर्ण अनुभव है उनके लिए जो महसूस ज़्यादा करते हैं, जो सोचते हैं, उनकेलिए एक सुखान्त अनुभव है।

जीवन एक सुख व दुख का प्याला है। खुशी के बिना जीवन नीरस व बेजान है। सुख-दुख एक दूसरे के पूरक है। क्योंकि हम कभी बहुत खुशी महसूस करते है। इसमें एक मूल के कारण हम दुख का अनुभव है जिससे हम दो-चार होते हैं।

अगर कोई हमसे अच्छे व्यवहार से पेश आता है, हमें खुशी होती है। परीक्षा में अच्छे अंकों से पास होने पर, खर्च के लिए उम्मीद से ज़्यादा पैसे मिलने पर हम बहुत ज़्यादा उत्साहित और खुश होजाते हैं।

दूसरी ओर अनेक कारण हैं जो हमें दुखी कर जाते हैं जैसे दूसरों के बुरे व्यवहार से, अन्याय से, परीक्षा में असफल होने पर या बिमारी से। सुबह से शाम तक जब तक हम सो नहीं जाते सुख और दुख के अनेक चेहरों से दो-चार होते हैं।

कुछ लोगों की यह गलत सोच और धारणा है कि अमीरी खुशी लाती है और गरीबी दुख। धनवान भी दुखी होते हैं। इसका एक मूल कारण यह है कि धनवान की इच्छाओं का अन्त नहीं होता। वह धनवान उन सब चीज़ों की इच्छा रखता है जो उसके पास नहीं होती। जबकि दूसरी ओर गरीब आदमी की इच्छायें बहुत ही सीमित होती हैं। पेट भर खाना, तन ढकने के लिए कपड़ा मिल जाने पर वह संतुष्ट हो जाता है।